April - September, 2012 Vol. 6 (2) अप्रैल - सितम्बर, २०१२ अंक ६(२)

KVK Knowledge Exchange Meet 2012

The meet was jointly organized by the Zonal Project Directorate - VII, Jabalpur and DRWA on Sept. 27-29. Dr. V. Venkatasubramanian, Assistant Director General (Agril. Extn.) ICAR inaugurated the Meet. In his inaugural address, Dr. V. Venkatasubramanian emphasized knowledge management in agriculture through more interaction, communication, discussion and deliberation. He appreciated the initiative taken by ZPD, Zone VII, Jabalpur through which KVK subject matter specialists got the opportunity to interact with ZPDs and scientists of different disciplines. Dr. Krishna Srinath, Director, DRWA, Bhubaneswar appreciated the initiative of such event of Knowledge Exchange among the scientist of DRWA with the practical experiences of the KVK scientists. Dr. Anupam Mishra, ZPD, Zone II in his address emphasized the need of knowledge exchange for enhancing the competency and efficiency of the KVK scientists. He informed that ZPD, Zone VII has completed six capacity building programme of KVK scientists with commodity based ICAR Institutes and SAUs - DWSR, Jabalpur, DSR, Indore, MPPCVV, Jabalpur, CIFA, Bhubaneswar, CRRI, Cuttack, CIAE, Bhopal, etc. On the occasion, Dr. Prabhukumar, ZPD, Zone VIII presented the KVK initiatives on marketing of the produce through branding and market linkage. An exhibition was also organised to display promising technology, success story and products made by the 39 KVKs. During the meet participants presented the achievements in horticulture and home sciene during XI Plan period. They also presented the action plan for 2012-13. A total of 46 KVK participants attended the programme. The programme was coordinated by Dr. A K Shukla, Dr. Anil Kumar, Dr. S R K Singh, Dr. Kundan Kishore and Dr. Abha Singh.

कृषि विज्ञान केन्द्र Knowledge Exchange Meet 2012

क्षेत्रीय परियोजना निदेशालय, जोन.VI, जबलपुर एवं कृ. म. अनु. नि. द्वारा संयुक्त रुप से Knowledge Exchange Meet-2012 का आयोजन 27-29 सितम्बर, 2012 को भुवनेश्वर में किया गया I डा. वी. सुब्रामण्यम, सहायक महानिदेशक भा. कृ. अनु. प. कृषि विस्तार, ने इस कार्यक्रम का उदघाटन किया I अपने उद्‌धाटन भाषण में डा. सुब्रामण्यम ने कृषि में ज्ञान प्रबंधन के मुद्दे पर जोर दिया जिसे संचार, विचार–विमर्श, एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के स्तर पर ज्ञान संसाधन के रुप में विकसित कर प्रबंधित किया जा सकता है I उन्होंने ZPD, जोन–VII, जबलपुर द्वारा की गई पहल की सराहना की जिससे कृषि विज्ञान केन्द्र के विषय विशषज्ञों को ZPD, कृ . म. अनु. नि. एवं अन्य संस्थानों के वैज्ञानिकों से विचार–विमर्श करने का अवसर मिला I डा. अनुपम मिश्रा, ZPD, जबलपुर ने अपने वैज्ञानिकों की योग्यता एवं दक्षता बढ़ाने के लिए इस तरह के छः कार्यक्रम– DWSR जबलपुर, DSR-इंदौर, MPPCVV- जबलपुर, CIFA-भुवनेश्वर, CRRI-कटक एवं CIAE-भोपाल के सहयोग से आयोजित किए हैं I डा. कृष्णा श्रीनाथ, निदेशक, कृ. म. अनु. नि. ने इस तरह के प्रयासों की सराहना की जिससे DRWA के वैज्ञानिकों और कृषि विज्ञान केन्द्रों के व्यवहारिक अनुभवों का आदान–प्रदान हो सके I डा. प्रभुकुमार, ZPD जोन VIII ने किसानों के उत्पादों की ब्रांडिग एवं उचित बाजार विपणन में कृषि विज्ञान केन्द्र की भूमिका पर प्रकाश डाला I इस अवसर पर एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया जिसमें नई तकनीकियों, सफल कहानी एवं 39 कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा बनाए गए उत्पादों को भी शामिल किया गया I इस तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने ग्यारवीं पंचवर्षीय योजना के दैरान बागवानी एवं गृह विज्ञान के क्षेत्र में किए गए कार्यों एवं बर्ष 2012–13 की कार्ययोजना को प्रस्तुत किया I इस कार्यक्रम को डा. ए. के. शुक्ला, डा. अनिल कुमार, डा. एस. के. सिंह, डा. कुन्दन किशोर एवं डा. आभा सिंह द्वारा समन्वित किया गया I

Summer School on Gender Mainstreaming for Resilient Agriculture

Directorate of Research on Women in Agriculture organized a summer school on Gender Mainstreaming for Resilient Agriculture from July 18 - August 7, 2012. Twenty five participants from 9 states attended the School. The Summer School was inaugurated by Dr. Krishna Srinath, Director, DRWA. Dr. Srinath emphasized the relevance of the Summer School in the current context of climate change and the need to build the resilience of farm families particularly women folk. The participants were given practical exposure on various gender mainstreaming methodologies and resilient agriculture practices. Visits were arranged to different organizations including CARI, CIFA, CRRI, DWM, Regional stations of CTCRI and IIHR and KVK, Puri. The participants also interacted with successful woman entrepreneurs. The participants also carried out assignments including participation of women in different farm enterprises, women and urban agriculture and inter-linkages between agricultural productivity, food security, poverty and gender. Dr. K. D. Kokate, DDG (Agril. Extension) elaborated the achievements of the country in food production and stressed the importance of producing more food to feed the teeming millions of population. The valedictory session of the Summer School was graced by Dr. S. L. Goswami, Director, NAARM as the Chief Guest. The participants while giving feedback thanked the organizers and ICAR for providing the opportunity of new learning in gender mainstreaming for building resilient agriculture in the country. The school was coordinated by Dr. K. Ponnusamy, Dr. A.K. Sukla, Dr. Anil Kumar, Dr. Kundan Kishore and Dr. Jyoti Nayak.

Summer school on Gender Mainstreaming for Resilient Agriculture

कृ. म. अनु. नि. में 18 जुलाई–07 अगस्त, 2012 तक एक Summer school, जिसका विषय था – Gender Mainstreaming for Resilient Agriculture का आयोजन किया गया जिसमें 9 राज्यों के 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया I Summer school का उद्घाटन डा. कृष्णा श्रीनाथ, निदेशक, कृ. म. अनु. नि. ने किया, जिन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में कृषि परिवारों, विशेषकर महिलाओं के लिए लचीली कृषि की आवश्यकता पर जोर दिया I प्रतिभागियों को लिंग को मुख्य धारा में लाने के प्रमुख व्यवहारिक तरीकों एवं कृषि को लचीला बनाने संबंधी विभिन्न जानकारियॉ दी गई I प्रतिभागियों के लिए विभिन्न ICAR सस्थानों CARI, CIFA, CRRI, DWM, IIHR, एवं CTCRI के क्षेत्रीय स्टेशनों तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, पुरी का दौरा करने की व्यवस्था भी की गई I प्रतिभागियों को विभिन्न कार्य जैसे – कृषि उद्यमों में महिलाओं की भागीदारी, महिलाएं एवं शहरी कृषि, कृषि उत्पादकता, खाद्य सुरक्षा, गरीबी एवं जेन्डरं के बीच अंतर-संबध पर भी चर्चा की गई I डा. के. डी. कोकाटे, उपमहानिदेशक कृषि प्रसार ने पिछले वर्ष के दौरान देश में खाद्यान्न उत्पादन की उपलब्धियों की सविस्तार चर्चा की तथा बढ़ती आबादी के कारण लाखों लोगों को खिलाने के लिए अधिक खाध उत्पादन के महत्व पर बल दिया I समर स्कूल के समापन समारोह में डा. एस. एल. गोस्वामी, निदेशक, NAARM, मुख्य अतिथि थे I इस कार्यक्रम का समन्वय डा के. पोन्नुशामी, डा ए.के. शुक्ला, डा अनिल कुमार, डा कुन्दन किशोर एवं डा ज्योति नायक ने किया।

Research Advisory Committee meeting

The 13th Research Advisory Committee meeting was held on 22-23 June, 2012 under the Chairmanship of Dr K. Narayana Gowda, Vice Chancellor, UAS, Bangalore. Dr Krishna Srinath, Director DRWA welcomed the Chairman and RAC Members and explained briefly the research achievements and other developments of the institute and also highlighted the activities for XII five year Plan. The Chairman in his opening remarks commended the efforts of DRWA in organizing Global Conference on Women in Agriculture and National Consultation on Gender Perspective in Agriculture in New Delhi. He stressed upon the development of various models to empower womenfolk for self sustainability. The detail research proposal for XII Plan EFC was presented under various thrust areas in addition of salient

अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक

तेरहवीं अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक, डा. नारायण गौड़ा, कुलपति, UAS बैंगलौर की अध्यक्षता में 22–23 जून, 2012 को आयोजित की गई I डा. कृष्णा श्रीनाथ, निदेशक, कृ. म. अनु. नि. ने RAC अध्यक्ष एवं सदस्यों का स्वागत किया तथा संक्षेप में संस्थान की अनुसंधान उपलब्धियों, अन्य घटनाओं एवं बारवीं पंचवर्षीय योजना की विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डाला I अध्यक्ष ने अपने उद्घाटन भाषण में कृ. म. अनु. नि. द्वारा आयोजित – कृषि में महिलाओं के परिपेक्ष्य पर राष्ट्रीय परामर्श और कृषि में महिलाओं पर वैश्विक सम्मेलन का आयोजन दिल्ली में करने के प्रयासों की सराहना की I उन्होंने महिलाओं की निजी स्थिरता के सशक्तिकरण के लिए विभिन्न मॉडल विकसित करने पर भी जोर दिया I बारवीं पंचवर्षीय योजना EFC का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया और नेटवर्क

achievements of the ongoing projects, including network projects. RAC suggested that technology development should be the thrust area as per the Vision- 2030. RAC suggested redesigning of implements in gender perspective. The Chairman advised that the proposal for XII Five year plan should be fine tuned based on the recommendations of the Global Conference held at NASC New Delhi in 2012. RAC recommended upgrading of DRWA as National Institute with more scientific strength in view of the of the mandate provided to the Institute.

परियोजना सहित अन्य चल रही परियोजनाओं की उपलब्धियों को प्रस्तुत कि गया I RAC ने यह सुझाव दिया कि विभिन्न उपकरणों को महिलाओं के अनुकूल बनाने के बारे में विकसित करने वाली एजेन्सियों को कृ. म. अनु. नि., redesigning के लिए सुझाव दे सकता है I अध्यक्ष ने यह सुझाव दिया कि बारवीं पंचवर्षीय योजना के प्रस्ताव में 2012 में आयोजित वैशिक सम्मेलन की सिफारिशों को शामिल करना चाहिए I RAC ने कृ. म. अनु. नि. को राष्ट्रीय संस्थान के रुप में जिसमें अधिक वैज्ञानिक हों, उन्नत करने की सिफारिश की I

Stakeholders' Meet

A meeting was organized at the Directorate on Sept. 8, 2012 to get the perceptions of various stakeholders' in formulating the research agenda and priorities for the XII Five Year Plan. Odisha has the advantage of the strong presence of a number of ICAR research institutes in various disciplines, SAU and agencies such as NHB, NABARD, etc. who are already contributing to Bring Green Revolution in Eastern India (BGREI). DRWA can help in this endeavour by forging partnership between stakeholders through collaborative programmes to address nutritional security and gender empowerment. Such a model developed in Odisha will be ideal for replication in other parts of the country. Following suggestions were made during the deliberations.

- Exploring the scope of developing nutrition Park by incorporating women-friendly horticultural technologies.
- Emphasis on the integration of poultry, goatry and fishery in the farming system for gender empowerment.
- Development of homestead integrated farming system for improved livelihood.
- Constraints in adoption of drudgery reducing tools by farm women need to be re-examined.

The meeting was Chaired by Dr. Krishna Srinath, Director, DRWA, and attended by the officials from Deptt. of Horticulture, Govt. of Odisha, Central Horticultural Experiment Station (CHES), Central Tuber Crop Research Institute (CTCRI), CRRI, Central Avian Research Institute (CARI), CIFA, Depts. of Home Science, AICRP (forage), Agronomy, Entomology, Extension of OUAT, KVK- Khorda, NABARD, National Horticulture Board (NHB) and DRWA. The programme was coordinated by Dr. A K Shukla, Dr. Anil Kumar and Dr. Kundan Kishore.

हितधारकों की बैठक

कृ. म. अनु. नि भुवनेश्वर में 08 सितम्बर, 2012 को एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें बारवीं पचंवर्षीय योजना के अनुसंधान एजेंडा एवं प्राथमिकताओं पर विभिन्न stakeholder से विचार–विमर्श किया गया I ओडिशा में उपस्थित विभिन्न ICAR संस्थान, कृषि विश्वविद्यालय, नेशनल हार्टीकलचर बोर्ड, नाबार्ड आदि पूर्वी भारत में हरित क्रांति लाने में अपना योगदान दे रहे हैं I कृ. म. अनु. नि. इस प्रयास में विभिन्न सहयोगी कार्यक्रमों के माध्यम से हितधारकों के साथ पोषण सुरक्षा एवं जेन्डर सशक्तिकरण में सहयोग कर सकता है I ओडिशा में विकसित इस तरह के आदर्श मॉडल को देश के अन्य भागों में भी अजमाया जा सकता है I विचार विमर्श के दौरान निम्न सुझाव प्रस्तुत किए गए I

- महिलाओं के अनुकूल बागवानी प्रौद्योगिकियों को शामिल कर पोषण पार्क की संभावनाओं की तलाश करना I
- महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कृषि प्रणाली में मुर्गी, मछली एवं बकरी के integration पर जोर
- बेहतर आजीविका के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली का विकास I
- मेहनत कम करने के लिए महिलाओं के अनुकूल बने कृषि उपकरणों की फिर से जॉच करने की आवश्यकता है I

इस बैठक का आयोजन डा. कृष्णा श्रीनाथ, निदेशक, कृ. म. अनु. नि. की अध्यक्षता में किया गया जिसमें भुवनेश्वर व उसके आसपास उपस्थित सभी ICAR सस्थानों, उड़ीशा कृषि विश्वविद्यालय, NHB, NABARD, कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृ. म. अनु. नि. ने भाग लिया I इस कार्यक्रम का समन्वय डा. ए के शुक्ला, डा. अनिल कुमार एवं डा. कुन्दन किशोर ने किया I

Trainers' training on drudgery in agriculture

A trainers' training on 'Drudgery reducing farm technologies/equipment for farm women' was conducted at

कृषि के क्षेष में कठिन परिश्रम पर प्रशिक्षक प्रशिक्षण

कृषक महिलाओं के कठिन परिश्रम को कम करने के लिए कृषि प्रौद्योगिकियां/उपकरण' पर एक प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

DRWA, Bhubaneswar from Sept. 11-15, 2012. Dr. Krishna Srinath, Director, DRWA inaugurated the training. Participants from KVKs of Odisha and Jharakhand states attended the training. During inaugural address, Dr. Krishna Srinath, Director, DRWA emphasized the importance of this training. She highlighted the contribution of DRWA and bottlenecks in adoption of women friendly farm equipment/ technologies. She also focused the need of active collaboration of KVKs during 12th plan. The participants were given practical exposure on various farm tools & equipment, anthropometric & strength measuring equipment, equipment used for assessing the physiological cost and drudgery assessment techniques.

An interface meeting was also was organized in collaboration with faculty of College of Agricultural Engineering, OUAT, DRWA and KVK Scientists /SMS on Sept. 13, 2012. An exposure visit to FMP department of OUAT was also organized. While giving feedback, participants thanked the organizers and ICAR for providing the opportunity of new learning in drudgery reducing technologies. They were in view for incorporating these drudgery reducing technologies/ techniques in their future work. The programme was coordinated by Dr. S.P. Singh, Dr. M.P.S. Arya, Dr. Jyoti Nayak and Dr. Abha Singh.

Training programme on Social Development in Watersheds

The Directorate conducted Odisha Watershed Development Mission (OWDM) sponsored training programme on 'Social Development in Watersheds on June 4-6, 2012. Twenty five participants working as water management team (WMT-Social) from different districts of Odisha participated in the training. The objective of the training was to build the capacity of WMT (Social) in understanding and addressing the issues of social importance in order to ensure the sustainable development of agriculture in watershed areas. Dr. Krishna Srinath, Director, emphasized the importance of group mobilization and its sustenance to bring out the long term development in water deficit regions. She highlighted the technological contribution and development of gender specific methodologies of DRWA. In his inaugural address Dr. Trilochan Mohapatra, Director, Central Rice Research Institute, Cuttack stated the close linkage of water with sustainable livelihood of farm families. There is a need for strong mobilization of women groups with missionary zeal for making strides in agricultural progress

कृ. म. अनु. नि. में 11-15 सितम्बर, 2012 तक किया गया जिसका उद्घाटन निदेशक डा. कृष्णा श्रीनाथ ने किया। अपने उदधाटन भाषण में डा. कृष्णा श्रीनाथ ने इस कार्यक्रम के महत्व पर बल दिया एवं कृ. म. अनु. नि. के प्रौद्योगिकी योगदान तथा महिलाओं के अनुकूल उपकरणों/यंत्रों को अपनाने में आने वाली बाधाओं के विषय में चर्चा की। उन्होंने बारवीं पचंवर्षीय योजना के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्रों के सहियोग पर भी बल दिया। प्रतिभागियों को विभिन्न कृषि एवं मानवशास्त्रीय और शक्ति नापने के विभिन्न यंत्रों के इस्तेमाल एवं ऑकलन की व्यवहारिक जानकारी दी गई।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान 13.09.2012 को एक interface बैठक का आयोजन भी किया गया जिसमें उड़ीशा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि अभियंत्रिकी विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्रों के विषय वस्तु विशेषज्ञ तथा कृ. म. अनु. नि. ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण के दौरान OUAT के FMP विभाग की visit की व्यवस्था भी की गई। इस कार्यक्रम को डा. एस. पी. सिंह, डा. एम पी एस आर्य, डा. ज्योति नायक एवं डा. आभा सिंह ने समन्वित किया।

Watershed में सामाजिक विकास पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

ओडिशा वाटरशेड विकास मिशन द्वारा प्रायोजित 'वाटरशेड में सामाजिक विकास' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 4-6 जून, 2012 को निदेशालय में किया गया। ओडिशा के विभिन्न जिलों के 25 WMT-Social प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य WMT-Social की कृषि के सतत् विकास को सुनिश्चित करने की दिशा में सामाजिक महत्व के मुद्दों के प्रति समक्ष एवं क्षमता विकास करना था। डा. कृष्णा श्रीनाथ, निदेशक ने स्थिर समूह निर्माण द्वारा पानी की कमी वाले क्षेत्रों के विकास पर बल दिया। उन्होंने कृ. म. अनु. नि. की विकसित प्रौद्योगिकियों एवं विशिष्ट जेण्डर मेथोडोलोजी पर भी प्रकाश डाला। डा. त्रिलोचन महापात्रा, निदेशक, के. चा. अनु. सं. ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि पानी ही जीवन है तथा पानी एवं महिलाओं का कृषि परिवारों की टिकाउ आजीविक में योगदान रहा है। इस समय जरुरत इस बात की है कि महिलाओं के समूह को मजबूत बनाया जाएँ जिससे कृषि

which will lead to equitable distribution of resources and benefits, he added. A total of 20 topics including watershed management guidelines, social security schemes, women's legal rights and entitlements, convergence of schemes, gender issues in watersheds, developing successful cases in watersheds etc were covered in the programme. In addition, participants were exposed to PRA exercises and interaction with SHG members, promoters and office bearers of SHG federation at Balagati village in Khurda district. The paricipants expressed their willingness to adopt the techniques learnt during the training. The programme was coordinated by Dr. K. Ponnusamy and Dr. Jyoti Nayak.

का विकास हो तथा संसाधनों एवं लाभों का समान वितरण हो सके। जल प्रबधंन के दिशा निर्देश, सामाजिक सुरक्षा योजनाएं, लैगिंक मुद्दों, वाटरशेड के सफल मुद्दे आदि कुल 20 विषयों को प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किया गया। इसके अलावा प्रतिभगियों को PRA अभ्यास, स्वयं सहायता समूह, प्रमोटरों एवं स्वयं सहायता समूह के फेडरेशन के पदाधिकारियों के साथ विचार–विमर्श कराया गया। इस कार्यक्रम को डा. के. पोन्नुसामी एवं डा. ज्योति नायक ने समन्वित किया।

Capacity building programme on value addition and processing

Four day Training on Capacity Building of Farm Women on Processing and Value Addition of Horticultural crops was organized on 9-12 July, 2012 under the Network Project at DRWA with an aim to enhance capacity of farm women in preparing processed products to diversify their source of income and to minimize the post harvest loss of fruits and vegetables. Twenty farm women from Khurda district of Odisha participated in the training programme. They were imparted knowledge on the importance of value addition and processing in horticultural crops and also about the potential of processing at small scale in widening their source of income. They were imparted hands-on training on pickle making, jelly making, squash and sauce making. Participants were advised to opt standard procedure and maintain proper sanitation while preparing the products. Farmwomen expressed their willingness to take up home-level preparation of pickle and squash for subsidiary income. Smt. Neera Majhi, Secretary DRWA Vegetable Growers Group, Giringaput, Khurda, on behalf of participants expressed her gratitude to the Scientists and Director, DRWA for the efforts taken by them to strengthen their capacity and giving them opportunity to take up this venture, though at small scale. The programme was coordinated by Dr. Kundan Kishore, Dr.A.K. Sukla, Dr. Naresh Babu and Dr. Abha Singh.

मूल्य संवर्धन और प्रसंस्करण पर क्षमता विकास कार्यक्रम

कृषक महिलाओं की बागवानी फसलों के मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण पर क्षमता विकास के लिए एक चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 9–12 जुलाई, 2012 को कृ. म. अनु. नि. में किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को प्रसंस्कृत उत्पादों को तैयार करने में सक्षम बनाना था जिससे उनके आय के स्त्रोत में विविधता आ सके तथा फसल कटाई के उपरान्त फल एवं सब्जियों के नुकसान को कम किया जा सके। खुर्दा जिले की 20 कृषक महिलाओं ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। उन्हें बागवानी फसलों के प्रसंस्करण एवं मूल्य वर्धन के महत्व की जानकारी दी गई तथा छोटे स्तर पर प्रसंस्करण द्वारा आय बढ़ाने के महत्व को भी समझाया गया। प्रतिभागियों को प्रसंस्करण के दौरान उचित स्वच्छता बनाए रखने तथा उत्पाद को तैयार करने के लिए उचित मानक प्रक्रिया का पालन करने की भी जानकारी दी गई। कृषक महिलाओं ने सहायक आय के लिए गृहस्तर पर अचार तथा स्क्वैश बनाने की इच्छा व्यक्त की। श्रीमती नीरा माझी, DRWA सब्जी उत्पादन समूह की सेक्रेटरी ने वैज्ञानिकों तथा DRWA को इस प्रशिक्षण का आयोजन करने के लिए धन्यवाद दिया जिससे गृहस्तर पर उत्पादन करने के लिए इस ज्ञान का उपयोग कर सकें। इस-कार्यक्रम को डा. ए.के. शुक्ला, डा. कुन्दन किशोर, डा. नरेश बाबु एवं डा. आभा सिंह ने समन्वित किया।

Gender mainstreaming through PPP model

Under the DRWA Public Private Partnership model for gender mainstreaming in agriculture, Assam Agricultural University (AAU), a partner, undertook an action model of PPP for producing vermicompost involving both public and private players. The farmers groups comprising 100 farm households were first sensitized about the benefit of compost in

पीपीपी मॉडल के माध्यम से Gender Mainstreaming

कृ. म. अनु. नि. के पी पी मॉडल द्वारा जेण्डर को मुख्यधारा में लाने के तहत, आसाम कृषि विश्वविद्यालय ने सार्वजनिक एवं निजी भागीदारी का उपयोग कर वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन का कार्य एक्सन रिसर्च के अन्तर्गत किया है। किसानों के समूह जिसमें 100 किसान परिवार शामिल थे, को सर्वप्रथम वर्मीकम्पोस्ट के गुणों के बारे में बताया गया जिससे मिट्टी की उर्वरता के साथ–साथ उत्पादन भी बढ़ता है। मौजूद स्वयं–सहायता

improving soil and water quality resulting better farm produce. The existing SHGs were used for gender mainstreaming efforts wherein both men and women were fully trained on vermicompost production. In addition, DRDA of state government was mobilized for providing subsides to produce the vermicompost. The technology was adopted by respondents with slight modification based on the perception and available resources. Farmers produced 200 to 500 kg per cycle (3 to 4 months). The project has facilitated the surplus produce selling through fairs and exhibitions. Each farm family learnt the packing of vermicompost and understood the value of organic produce. Women felt the enhanced access to services provided by panchayat.

समूहों को मुख्यधारा में लाने के लिए महिलाओं एवं पुरुषों को वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन में पूरी तरह प्रशिक्षित किया गया। इसके अलावा राज्य सरकार के DRDA को वर्मीकम्पोस्ट के उत्पादन में सहियोग के लिए प्रयास किया गया। उत्तरदाताओं ने उपलब्ध संसाधनों एवं धारणाओं में मामूली परिवर्तन के साथ प्रौद्योगिकि को अपनाया। प्रत्येक चक ;3 से 4 महीनों में किसानों ने 200–500 किग्रा का उत्पादन किया। किसानों ने 1000/– रुपये बाँस, केंचुआ और प्लास्टिक शीट पर खर्च किया तथा उन्हें 10–15 प्रतिशत लाभ हुआ। इस परियोजना ने अधिक उत्पादन को मेलों तथा प्रदर्शनियों के माध्यम से वेचने में सहयोग किया। प्रत्येक किसान परिवार ने वर्मीकम्पोस्ट को पैक करना एवं उसके जैविक महत्व को समझा। महिलाओं ने पंचायत द्वारा उपलब्ध कराई गई सुविधा का अनुभव किया।

Farmer-scientist interface

To strengthen the capacity of the farmwomen in safe grain storage a farmers-scientist interface was organized on Sept. 11, 2012 at Kantamalim village of Khurda district under Refinement of storage pest management techniques in selected cereals, pulses, condiments and spices with gender perspective. The meeting was attended by Dr. B. C. Jena, Professor and Head, Entomology, OUAT, Sh. Hadu Bandhu Mahapatra, Sarpanch, Simore, scientists, DRWA and more than eighty farmers including farmwomen. Dr. B. C. Jena and DRWA scientists highlighted the different methods of safe grain storage, seed drying technique and packing with neem leaf powder (Azadirachita indica), begonia leaf powder (Vitex negundo), chilli powder (Capsicum annum), sand, and ash, etc. Sri Mahapatra explained about various schemes for farmwomen. He also replied various queries of the farmwomen raised during the interface. Demonstrations on pesticide toxicity, protective equipments (PPE), trouble gum, use of poison baits for rats were given to the participants. Dr. S. K. Srivastava and Dr.Naresh Babu coordinated the programmes.

किसान–वैज्ञानिक इंटरफेस

कृषक महिलाओं की भण्डारण में क्षमता बढ़ाने के लिए किसान–वैज्ञानिक इंटरफेस का आयोजन खुर्दा जिले के कंटामलिम गॉव में 11. 09. 2012 को किया गया। इस इंटरफेस में डा. बी. सी. जेना, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष कीट विज्ञान, OUAT, श्री हाडू बन्धू महापात्रा, सरपंच सिमोर गॉव, कृ. म. अनु. नि. के वैज्ञानिको एवं 80 किसानों जिनमें कृषक महिलाएं भी शामिल थी ने भाग लिया। इंटरफेस भागीदारी मोड में आयोजित की गई जिसमें डा. बी सी जेना एवं DRWA के बैज्ञानिकों ने सुरक्षित भण्डारण के उचित उपायों, बीज सुखाने की तकनीक एवं नीम के पत्तों, मिर्चपाउडर, राख और बालू के साथ भण्डारण की विभिन्न विधियों पर प्रकाश डाला। इंटरफेस के दौरान कृषक महिलाओ द्वारा पूछे गये विभिन्न प्रश्नों का उत्तर भी दिया गया। उपकरणों, ट्रबलगम, चूहों को पकड़ने के लिए जहर बैट आदि के बारे में प्रतिभागियों को डिमोन्सट्रेशन दिया गया। इस कार्यक्रम का समन्वय डा एस.के. श्रीवास्तव एवं डा नरेश बाबू ने किया।

Exhibition

DRWA participated in an exhibition during National Convention-The Next Frontier of Agri-Business and Technology organized by Industrial Exhibition Bureau, Government of Gujarat in coordination with Confederation of Indian Industry (CII) at Mahatma Mandir, Gandhinagar, Gujarat from 3rd-6th September 2012. The visitors evinced interest on gender friendly maize dehusker and sheller,

प्रदर्शनी

कृ. म. अनु. नि. ने ICAR एवं SAU Stakeholder बैठक एवं CRRI स्थापना दिवस के अवसर पर, CRRI कटक में अपने उत्पादों एवं पौद्योगिकियों को २३ अप्रैल एवं 30–31 जुलाई, 2012 को प्रदर्शित किया।

weaning mix, nutrition garden while policy makers and NGOs showed interest on gender sensitive extension approaches. Dr. K Ponnusamy and Dr. Anant Sarkar represented DRWA in the Convention.

An exhibition was organized at Central Rice Research Institute, Cuttack on 23rd April.

DRWA displayed its products and technologies during an exhibition organized at ICAR-SAU stakeholders meet at CRRI, Cuttack during 30-31, July 2012.

Exposure visit

- About 30 farmers from Koderma district of Jharkhand under NICRA project of KVK visited DRWA on 03.04.2012 and exposed to women friendly farm technologies.
- About 20 farmers and two officials from Department of Agriculture, Government of Meghalaya visited DRWA on 14.05.2012.
- Thirty MBA students of School Rural Management, KIIT University, Bhubaneswar were given exposure on gender sensitization on 09.07.2012
- Seven students of Department of Agricultural Extension, OUAT were given exposure on Role of gender in agriculture on 16.07.2012
- About 146 students and three faculties from College of Agriculture, Annamalai University, Chidambaram, Tamil Nadu visited DRWA on 01.09.2012
- Twenty scientist trainees of MSSRF visited DRWA on 19.09.2012 as part of the training programme on driving individual and organizational change organized by KITT School of Rural Management, Bhubaneswar.

Recognition

The Directorate was rated excellent for its performance in Result Framework Document.

Appointment

Dr. Anant Sarkar joined as a Senior Scientist, Agril. Statistics on April 27, 2012.

Transfer

Sri S.S. Verma, PS to Director was transferred to CIPHET, Ludhiana on May 10, 2012.

Seminar attended

Dr. Kundan Kishore

- International symposium on tropical and subtropical fruits held on June 18-20, 2012 in Guangzhou, China

कृ. म. अनु. नि. ने गुजरात सरकार के औद्योगिक प्रदर्शनी ब्यूरो द्वारा आयोजित, नेशनल कन्वेंशन – 'अगले फ्रंटियम में कृषि व्यापार और प्रौद्योगिकी' पर आयोजित प्रदर्शनी जो कि महात्मा मंदिर, गाँधीनगर गुजरात में 3–6 सितम्बर, 2012 को आयोजित की गई में भाग लिया। लगभग 10000 लोगों जिनमें किसान, शिक्षाविद, नीति निर्माता, युवा उद्यमी और देश के विभिन्न ATMA जिलों से आए किसान प्रतिनिधियों ने भाग लिया। डा. के पोन्नुशामी और डा. अनन्त सरकार ने कन्वेंशन में कृ. म. अनु. नि. का प्रतिनिधित्व किया।

अगंतुक

- KVK के NIGRA परियोजना के तहत झारखण्ड राज्य के कोडरमा जिले के 30 किसानों ने 03. 04. 2012 को कृ. म. अनु. नि. का भ्रमण किया तथा, जिन्हें महिलाओं के अनुकूल प्रौद्योगिकीयों की जानकारी दी गई।
- मेघालय सरकार के कृषि विभाग के दो अधिकारियों एवं लगभग 20 किसानों ने 14. 05 .2012 को कृ. म. अनु. नि. का भ्रमण किया।
- KIIT विश्वविद्यालय के रुरल मैनेजमेंट स्कूल के 30 एम बी ए छात्रों को जेण्डर संवेदीकरण की जानकारी दी गयी।
- OUAT के कृषि प्रसार विभाग के सात छात्रों को कृषि में जेण्डर की भूमिका से अवगत कराया गया।
- अन्नामलाई विश्वविद्यालय तामिलनाडु के कृषि कॉलेज के 146 छात्रों एवं तीन संकायों ने 01. 09. 2012 को कृ. म. अनु. नि. का भ्रमण किया।
- MSSRF के 20 वैज्ञानिक प्रशिक्षकों ने 19. 09. 2012 को कृ. म. अनु. नि. का भ्रमण किया जो कि KIIT विश्वविद्यालय के रुरल मैनेजमेन्ट विभाग द्वारा आयोजित एक प्रशिक्षण का हिस्सा था।

सम्मान

कृ. म. अनु. नि. 98% बार्षिक समग्र स्कोर हासिल कर उत्कृष्ट श्रेणी में ऑका गया।

नियुक्ति

डा. अनन्त सरकार ने संस्थान में वरिष्ठ वैज्ञानिक, सांख्किकी का पद भार संभाला।

स्थानांतरण

श्री एस.एस. वर्मा निदेशक के व्यक्तिगत सहायक का स्थानांतरण CIPHET, लुधियाना में 10 मई, 2012 को हुआ।

सेमिनार/संगोष्ठी/बैठकों में भागीदारी

- डा. कुन्दन किशोर ने ट्रौपिकल एवं सब ट्रौपिकल फलों पर अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन गुवानजाओ, चीन 18–20 जून 2012 में भाग लिया।

Dr. K Ponnusamy

- XIX Zonal Workshop of KVKs Zone-VII on May 4-6, 2012, at Jagdalput, Chhattisgarh
- State Level Extension Council Meeting at OUAT, Bhubaneswar on 17.05.2012

Dr. S K Srivastava, Dr. A K Shukla, Dr. Anil Kumar, Dr. K Ponnusamy, Dr. Naresh Babu, Dr. Sabita Mishra, Dr. Kundan Kishore

- Global Conference on "Horticulture for food, nutrition and livelihood options" at OUAT, Bhubaneswar from 28-31, May, 2012.

Dr. S P Singh

- Agri-business campaign organized by ZTM-BPD Unit NIRJAFT, Kolkatta at DWM, Bhubaneswar on 2.5.2012.

Dr. Sabita Mishra

- Interface meeting of ICAR Institutes - SAU - State Departments at Central Rice Research Institute, Cuttack from 30-31, July, 1012.

Dr. Jyoti Nayak

- Water policy-issues and strategies for future' on 12.05.12, at DWM, Bhubaneswar

- डा. के पोन्नुसामी ने 4–6 मई के दौरान जोन–11 की XIX वीं कार्यशाला, जगदलपुर, छत्तीसगढ, में भाग लिया ।
- डा. के पोन्नुसामी ने 17. 05. 2012 को राज्य स्तरीय प्रसार की बैठक, OUAT में भाग लिया ।
- डा. एस के श्रीवास्तव , डा. के. पोन्नुशामी, डा. ए.के. शुक्ला, डा. अनिल कुमार, डा. कुन्दन किशोर, डा. सबिता मिश्रा एवं डा. नरेश बाबू ने वैश्विक सम्मेलन : खाद्य, पोषण एंव जीविका संसाधनों के लिए बागवानी, OUAT भुवनेश्वर में 28-31 मार्च, 2012 में भाग लिया ।
- डा. एस. पी. सिंह ने एग्री–बिजनेस कैंपेन DWM भुवनेश्वर में 02 मई 2012 को भाग लिया ।
- डा. सबिता मिश्रा ने ICAR संस्थानों, राज्य कृषि विश्वविद्यालय एंव राज्य सरकार के विभिन्न विभागों की बैठक में CRRI कटक, 30-31 जुलाई, 2012 भाग लिया ।
- डा. ज्योति नायक ने जलनीति मुद्ददों और भविष्य के लिए रणनीति, DWM, भुवनेश्वर, 12 मई, 2012 को भाग लिया ।

From Director's Desk

Women are vital component of growth of agriculture and rural economy through their roles as farmers, labourers and entrepreneurs. However they face more constraints than men in access to productive resources. Women often manage complex households and pursue multiple livelihood strategies which are generally not valued as an economically active effort. The Directorate has been engaged in improving the economic conditions and livelihood of women through technological interventions, skill upgradation and development of drudgery reducing options for decreasing workload and increasing the efficiency. Considering the importance of women's economic productivity and need of their empowerment and nutritional security, DRWA is focusing on the accessibility of technology to farm women and forging partnership between stakeholders through collaborative programmes.

M. P. S. Arya

निदेशक की कलम से

महिलाएं किसान, मजदुरों एंव उद्यमियों के रूप में कृषि विकास और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण घटक हैं। हालांकि पुरूषों की तुलना में उत्पादक संसंधनों का उपयोग करने में उन्हें अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। महिलाएं अकसर घर के जटिल प्रबंध के साथ-साथ जीविका रणनीति में भी शामिल रहती हैं। जिसका कोई आर्थिक ऑकलन नहीं होता। यह निदेशालय बिभिन्न उन्नत तकनीकियों, कौशल, विकास एवं उनकी मेहनत को कम करने के विभिन्न उपायों द्वारा उनकी आर्थिक स्थिति एवं जीविकोपार्जन को विकसित कसे के लिए प्रयासरत है। कृषिरत महिला अनुसंधान निदेशालय महिलाओं की आर्थिक उत्पादकता, उनके सशक्तिकरण और पोषण सुरक्षा की जरुरत के महत्व को ध्यान में रखते हुए कृषक महिलाओं के लिए प्रौद्योगिकी की पहुँच पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है तथा सहयोगी कार्यक्रमों के माध्यम से हितधारकों के बीच साझेदारी बढाने के लिए प्रतिवद्ध है।

एम.पी.एस. आर्य

Published by : Dr. M. P. S. Arya, Director
Directorate of Research on Women in Agriculture (ICAR), P.O. Baramunda, Bhubaneswar-751 003, Odisha
Ph : 0674-2386220, F : 0674-2386242
Editors : Dr. Kundan Kishore
: Dr. Abha Singh
E-mail : nrcwa@nic.in
Website : http://www.drwa.org.in

प्रकाशन : डा. एम.पी.एस. आर्य, निदेशक,
कृषिरत महिला अनुसंधान
निदेशालय (भा.कृ.अनु.प)
डाकघर-बरमुण्डा, भुवनेश्वर - ७५१००३, उडीशा
दूरभाष : ०६७४-२३८६२२०
फैक्स : ०६७४-२३८६२४२
सम्पादक : डा. कुन्दन किशोर
डा. आभा सिंह
ई-मेल : nrcwa@nic.in
Website : http://www.drwa.org.in